ENERGY FOR EVER

इरेडा
IREDA

ONCE IREDA ALWAYS IREDA

(A Navratna CPSE)

अक्षय क्रांति

(ई-पत्रिका)

जनवरी-मार्च 2026 अंक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

ENERGY FOR EVER

इरेडा
IREDA

ONCE IREDA ALWAYS IREDA

(A Navratna CPSE)

इरेडा का परिचय

भारत का सबसे बड़ा प्योर-प्ले ग्रीन फाइनेंसिंग एनबीएफसी

- 39 वर्ष से अधिक आरई क्षेत्र में अनुभव
- नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के लिए वित्तीय उत्पादों और सेवाओं का व्यापक सूट
- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी का दर्जा
- प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 'गैर-जमा स्वीकार करने वाली एनबीएफसी' का दर्जा।
- आईएफएससी में - गिफ्ट सिटी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी का निगमन।

नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के प्रचार और विकास के लिए भारत सरकार की पहल में रणनीतिक भूमिका

- 71.76% भारत सरकार के स्वामित्व में
- अनुसूची-ए और नवरत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम
- कार्यान्वयन/नोडल एजेंसी कई प्रमुख एमएनआरई योजनाओं के लिए

प्रदर्शन ट्रैक रिकॉर्ड

- 'एएए/स्थिर' की उच्चतम क्रेडिट रेटिंग
- एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स लिमिटेड ने आउटलुक 'स्थिर' के साथ 'बीबीबी' दीर्घकालिक और 'ए-2' अल्पकालिक जारीकर्ता क्रेडिट रेटिंग प्रदान की।
- वित्त वर्ष 2021 से एमएनआरई के साथ समझौता ज्ञापन के अनुसार लगातार 'उत्कृष्ट' दर्जा दिया गया है।

कॉर्पोरेट गवर्नेंस के उच्च मानक के लिए प्रतिबद्ध

- 15 दिनों के भीतर वित्त वर्ष 25 के वार्षिक लेखा परीक्षित परिणाम प्रकाशित किए गए- भारत के बैंकिंग और एनबीएफसी क्षेत्र में पहला सीपीएसई।
- 31 मार्च'26 को व्यवसाय प्रदर्शन की सूचना उसी दिन सेबी को दी गई.

उत्पादों और सेवाओं के व्यापक सूट के साथ नवीकरणीय क्षेत्रों में उपस्थिति

पारंपरिक आरई प्रौद्योगिकियां	उभरती हुई आरई प्रौद्योगिकियां	अवधारणा से लेकर कमीशनिंग तक पेश किए गए उत्पाद
सौर ऊर्जा	बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली	परियोजना सावधि ऋण
पवन ऊर्जा	इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग इंफ्रा	ऋणों का पुनर्वित्त
जल विद्युत	ग्रीन हाइड्रोजन और डेरिवेटिव	ऋण सिंडिकेशन
ट्रांसमिशन	पंप स्टोरेज हाइड्रो	टॉप-अप लोन
बायोमास और सह-उत्पादन	स्मार्ट मीटर	भुगतान ऑर्डर इंस्ट्रूमेंट्स पर
अपशिष्ट से ऊर्जा	आरई उपकरण निर्माण	प्रतिभूतिकरण के जरिए ऋण अविष्य के नकदी प्रवाह
एथनॉल		सांत्वना पत्र/अधिग्रहण पत्र
ऊर्जा दक्षता और संरक्षण		बोली सुरक्षा के लिए आरई आपूर्तिकर्ताओं, डेवलपर्स, विनिर्माण और ईपीसी ठेकेदारों के लिए गारंटी सहायता योजना

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

डॉ. बिजय कुमार महान्ती
निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्री दीपक कुमार बारिक
कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)
श्रीमती माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू , प्रबंधक (राजभाषा)
श्री अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं सरकार अथवा इरेडा का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

"अक्षय क्रांति" पत्रिका के मार्च 2026 तिमाही अंक के माध्यम से आप सभी कर्मचारियों से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यों, उपलब्धियों और योजनाओं का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारी टीम की सामूहिक ऊर्जा, समर्पण और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है।

जैसा की पिछला वर्ष चुनौतियों के साथ-साथ अनेक नई संभावनाएँ को लेकर आया। हमारी टीम ने अपने नवाचार, अनुशासन और निरंतर प्रयासों के बल पर इन चुनौतियों को अवसरों में बदला और संगठन को प्रगति के नए आयाम तक पहुँचाया है। मुझे विश्वास है कि इसी टीम भावना और सकारात्मक सोच के साथ हम आने वाले समय में भी नए मानक स्थापित करेंगे। विगत वर्ष के दौरान वैश्विक तथा राष्ट्रीय परिवेश में अनेक परिवर्तन और चुनौतियाँ उपस्थित रहीं है। इन परिस्थितियों में हमारे संगठन ने अपने सुविचारित संचालन, प्रभावी रणनीतियों और समन्वित टीम-भावना के माध्यम से उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। यह उपलब्धि हमारे प्रत्येक सदस्य के अनुशासन, समर्पण और दृढ़ निश्चय का प्रतिफल है।

मैं संगठन के सभी सदस्यों, हितधारकों और सहयोगियों को उनके निरंतर समर्थन, विश्वास और योगदान के लिए धन्यवाद देता हूँ। आपकी प्रतिबद्धता ही हमारी सफलता की आधारशिला है। आइए, हम सब मिलकर उत्कृष्टता, नवाचार और सेवा की इस यात्रा को और भी ऊँचाइयों तक ले जाएँ। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र आज देश की विकास यात्रा का अभिन्न अंग बन चुका है। ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में इरेडा की भूमिका महत्वपूर्ण और दूरगामी है। बीते वर्षों में संगठन ने जिस दक्षता, पारदर्शिता और प्रोफेशनल उत्कृष्टता के साथ कार्य किया है, वह आप सभी की मेहनत, समर्पण और अदम्य टीम-भावना का परिणाम है। मैं आप में से प्रत्येक को इस उल्लेखनीय योगदान हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ। हिंदी हमारे देश की पहचान, हमारे चिंतन और हमारी कार्य संस्कृति का महत्वपूर्ण आधार है। इरेडा में राजभाषा के संवर्धन और प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में आप सभी द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा के समृद्धिकरण में योगदान देगी, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करेगी।

मैं आशा करता हूँ कि यह अंक आप सभी के लिए प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सिद्ध होगा। संगठन की प्रगति में आपका सहयोग, अनुशासन और प्रतिबद्धता भविष्य में भी इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा—इसी विश्वास के साथ मैं आप सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ।

संदेश

डॉ. बिजय कुमार महान्ती
निदेशक (वित्त)

प्रिय साथियों,

मुझे इरेडा की गृह पत्रिका **"अक्षय क्रांति"** के जनवरी-मार्च 2026 अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं है, बल्कि प्रत्येक इरेडा कर्मी के लिए स्वयं को व्यक्त करने का एक सशक्त मंच है।

भारत में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हिंदी है। यह भारत की राजभाषा और प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में जानी जाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की लगभग 44% जनसंख्या हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलती है। इसके अलावा, यह अनेक लोगों द्वारा दूसरी एवं तीसरी भाषा के रूप में भी बोली और समझी जाती है। हिंदी का संरक्षण और संवर्धन करना न केवल हमारी ज़िम्मेदारी है, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर भी है। वैश्वीकरण और तकनीकी युग के दबाव के बीच हिंदी के प्रति हमारा लगाव और इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाना इसके उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करेगा।

नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए सुदृढ़ वित्तीय ढांचा तैयार कर हम स्वच्छ, आत्मनिर्भर और सतत भारत के निर्माण में योगदान दे रहे है। इस यात्रा में आप सभी का समर्पण अत्यंत प्रशंसनीय है।

आइए, भारतीय मूल्यों, तकनीकी सुदृढ़ता और वित्तीय अनुशासन के साथ इरेडा को नयी ऊंचाइयों तक पहुंचाएं।

संदेश

श्री दीपक कुमार बारिक

कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)

प्रिय साथियों,

"अक्षय क्रांति" का यह अंक इरेडा की उस शक्ति को उद्घाटित करता है, जो न केवल हमारे कार्यों और उपलब्धियों का दस्तावेज़ है, बल्कि हमारी संस्थागत आत्मा, भारतीय सोच और सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी प्रतिबिंबित करती है।

हिंदी भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखती है, यह सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और देश की विविधता के जीवंत ताने-बाने में एक आवश्यक धागा है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आत्मा है। भारतीय संस्कृति में संतुलन, अनुशासन और दीर्घकालिक दृष्टि को विशेष महत्व दिया गया है—और यही मूल्य हमारे वित्तीय प्रबंधन का आधार हैं। इरेडा में हम वित्त को केवल संख्याओं तक सीमित न रखते हुए, उसे राष्ट्र की हरित ऊर्जा यात्रा का सशक्त साधन बनाते हैं।

इरेडा में हम नवीकरणीय और हरित ऊर्जा के माध्यम से केवल ऊर्जा समाधान ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और संतुलित भविष्य गढ़ रहे हैं। इस महान उद्देश्य में प्रत्येक कर्मचारी की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हम "अक्षय क्रांति" के लेखकवर्ग को उनके योगदान हेतु धन्यवाद देते है। हमें यह विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा। अक्षय क्रांति पत्रिका की धरोहर को समृद्ध बनाने की दिशा में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

संदेश

माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

प्रिय सहकर्मियों,

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है प्रत्येक तिमाही "अक्षय क्रांति" माध्यम से आप सभी से संवाद करने का अवसर प्राप्त होता है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे संगठन की कार्य-संस्कृति एवं राजभाषा संबंधी उपलब्धियों का सामूहिक दर्पण भी है।

पिछली तिमाही में आप सभी ने जिस प्रतिबद्धता, परिश्रम और सकारात्मक सोच के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन किया है, वह सराहनीय है। बदलते कार्य परिवेश और नई चुनौतियों के बीच आपकी अनुकूलन क्षमता एवं टीमवर्क ने संगठन को निरंतर प्रगति की राह पर अग्रसर रखा है। हमारे संस्थान हेतु गर्व का विषय है कि हमारे पास ऐसे सक्षम, कर्मठ और मूल्य-आधारित कर्मचारी हैं।

प्रबंधन के दिशानिर्देशों के अनुरूप हमारा यह निरंतर प्रयास रहा है कि कर्मचारियों के कौशल विकास, कार्यस्थल पर समानता, पारदर्शिता तथा स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन को प्राथमिकता दी जाए। आने वाली तिमाहियों में हम प्रत्येक कर्मचारी को उनके कार्य में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु हर संभव प्रयास करेंगे।

मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि इस ई-पत्रिका के माध्यम से अपने विचार, रचनात्मक लेखन, अनुभव और सुझाव साझा करें। आपकी सहभागिता ही इस मंच को जीवंत बनाती है और हमें एक-दूसरे से सीखने का अवसर प्रदान करती है।

अंत में, संगठन की सफलता में आपके निरंतर योगदान के लिए मैं आप सभी का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबके सहयोग से हम भविष्य की चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित करते हुए नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेंगे।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख/कविता रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	समय द्वारा इशारे	लेख	स्वेता गुप्ता, उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा	01
2.	शरद – पूर्णिमा	कविता	संगीता श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	02
3.	चांद	लेख	आशुतोष भूयां, उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा	03
4.	डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य	लेख	सरबजीत कौर, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा	04
5.	प्रशासनिक कार्यों में मातृभाषा का महत्व	लेख	राजेश कुमार निषाद, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त तथा लेखा) इरेडा	05
6.	अस्थिर समय में ऊर्जा संप्रभुता: ईरान-अमेरिका संघर्ष के बीच भारत की नवीकरणीय ऊर्जा रणनीति	लेख	पीयूष कुमार अरोडा, वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना), इरेडा	07
7.	कार्बन फुटप्रिंट: क्या हम सच में जागरूक हैं?	लेख	ऋषभ मंगल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	10
8.	अक्षय संकल्प: जब संख्याएँ मुस्कुराने लगीं	लेख	रोमेश कुमार गुप्ता, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	12
9.	मातृभाषा की महिमा	कविता	पीयूष अग्रवाल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा विभाग), इरेडा	14
10.	प्रकृति से प्रगति का सूत्र: भारतीय संस्कृति और अक्षय ऊर्जा का पुनर्जागरण	लेख	विराट चौधरी, प्रबंधक (परियोजना), इरेडा	15
11.	नारी: शक्ति और सम्मान	कविता	अनुष्का कुमारी, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	18
12.	सौर पार्क : भारत की ऊर्जा क्रांति के आधारस्तंभ	लेख	रिज़वान अथर, उप प्रबंधक (परियोजना), इरेडा	19
13.	एक्सजेड बैकडोर घटना	लेख	मैत्रिय कुमार श्रीवास्तव, उप प्रबंधक (आईटी), इरेडा	22
14.	वास्तविक सुख की अनवरत खोज	लेख	रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	24
15.	डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य	लेख	साक्षी साव, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	26
16.	जूतों की अदला-बदली	लेख	शुभम सिंह, कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना), इरेडा	28
17.	बिंब-क्षमता का विकास	लेख	राहुल राज, कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना), इरेडा	29
18.	एसी.सी. की एक रोमांचक यात्रा	लेख	दिग्विजय सियाग, पुत्र- भागीरथ सियाग	31

समय द्वारा इशारे

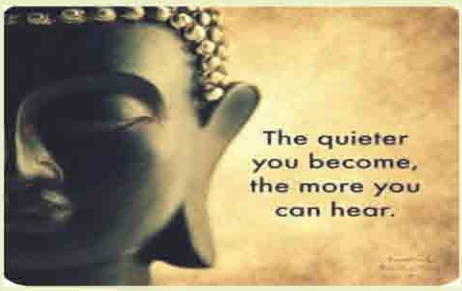

हमारे जीवन में अनेकों घटनाएँ होती हैं, जिसकी हमें समय-समय सूक्ष्म इशारे मिलते हैं। अगर इन इशारों को हमारी बुद्धि पकड़ ले, तो आने वाली विषम परिस्थितों का सामना हम कर सकते हैं या फिर कोई बड़ी दुर्घटना को टाला भी जा सकता है।

यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी सिस्टम डिज़ाइन में सुरक्षा अलार्म लगाए जाते हैं। कोई गड़बड़ी हुई तो लेवल-1 अलार्म बजता है और अगर गड़बड़ी ठीक नहीं कर पाए तो लेवल-2 अलार्म बजेगा । अगर निर्धारित अवधि में गड़बड़ी को ठीक कर लिया जाए तो सिस्टम सुचारू रूप से चलने लगता है, अन्यथा सिस्टम ठप हो जाती है।

ऐसा ही कुछ हमारे स्वास्थ्य के साथ भी होता है। बड़ी बीमारी आने से पहले कई इशारे दस्तक देते हैं। समय रहते इन इशारों को समझ लें और सुधारात्मक कार्रवाई करें तो रोग पर जीत पा सकते हैं।

उपर्युक्त उद्धरण स्थूल इशारे को दर्शाता है। परंतु जीवन में कई घटनाओं के घटित होने से पूर्व, हमें सूक्ष्म इशारे मिलते है। इन इशारों को समझने के लिए हमें अंतर्मुखता की गहराई में जाने का निरंतर अभ्यास करना होगा। साथ-साथ अच्छी परख शक्ति चाहिए और मन अनावश्यक एवं व्यर्थ के ख्यालों से मुक्त हो,

स्वेता गुप्ता, उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा

ठीक उस प्रकार जैसे किसी स्वच्छ एवं शांत झील की तल की गहराई में पड़ी छोटी सी सुई भी दिख जाती है। स्पष्टता के लिए, मैं अपने साथ बीती एक घटना का वर्णन करूँगी।

एक दिन मैं ऑफिस से घर वापस आ रही थी। भीड़-भाड़ वाले इलाके से जब मैं धीमी गति से कार चलाते हुए गुज़र रही थी कि अचानक, एक व्यक्ति अपनी मोटर-साइकिल मेरी गाड़ी के सामने की ओर आकर और हाँथ जोर-जोर से हिलाकर कुछ कहे जा रहा था। कार की खिड़कियाँ बंद होने के कारण मैं कुछ सुन नहीं पायी, परंतु स्पष्ट था कि वो मुझ पर क्रोध कर रहा था। जब मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो करीब एक मिनट में वो व्यक्ति अपनी मोटरसाइकिल पर बैठ मेरी आँखों से ओझल हो गया। परंतु मेरा चिंतन चलने लगा कि आख़िर उसके मन में मेरे प्रति इतना क्रोध क्यों था?

पर पूरी बात अगले दिन समझ आई, जब सुबह ऑफिस जाते वक्त, रास्ते में टायर पंक्चर हुआ। बड़ी मुश्किल से, मैं गाड़ी को लेकर पंक्चर की दुकान पहुँची। परंतु मेरे मन में कल की बातें गूँज रही थी। तुरंत मैंने कार का इंडिकेटर चेक किया तो पता चला कि बायीं इंडिकेटर काम ही नहीं कर रहा है। मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर मिल गया।

टायर पंक्चर बनने के बाद मैं सावधानी से गाड़ी चलाते हुए मैकेनिक के पास पहुँची और इंडिकेटर ठीक कराई। मैं समझती हूँ, सूक्ष्म इशारे ने मुझे एक बड़ी दुर्घटना से बचा लिया।

शरद – पूर्णिमा

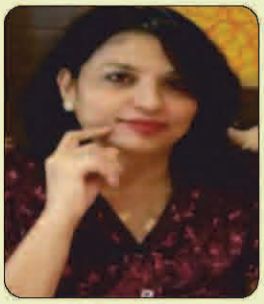

(संगीता श्रीवास्तव)
उप महाप्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

आया चांद वापिस
संग है उसके चांदनी,
पूर्ण और पूर्णत्व से भरी
तारों की चुनरी ओढ़े
शरमाती सी चांदनी,
शरद-पूर्णिमा की रात्रि में
जग में अमृत-छलकाती चांदनी,
आया चांद वापिस
संग है उसकी चांदनी
तप्त धरती के हृदय में
शीतलता बरसाती चांदनी,
आओ बटोरे दामन में
चन्दा संग है चांदनी
प्रेम हृदय के रिक्त मनो को
चांदी के तारों से सिलती चांदनी,
आया चांद वापिस
संग लिए है चांदनी
सुप्त रात्रि के सुप्त जगत में
सपनों का संसार सजाती
मुस्कुराती चांदनी,
सागर, झील, नदी में
प्रतिबिंबित होती चांदनी
लहराती, इतराती, मदमाती, चांदनी

धरती और गगन तक
बस चमकता चांद और
संग उसके है चांदनी
प्रेम की भाषा मौन मगर
नृत्य-युगल से लिखती
प्रेम-काव्य चांदनी
सपनों के रूपहले जगत में
चमकीले जाल बिछाती चांदनी,
सूरज भी उस पार से देखें
संसार सजाती चांदनी,
फिर आया है चांद वापिस
संग उसके है चांदनी

****

आशुतोष भूयां
उप महाप्रबंधक (परियोजना), इरेडा

चाँद

अरसे बाद आज जब छत पर लेटे हुए चाँद को निहारा, तो दिल में एक ईर्ष्या सी जगी। रे चाँद! तेरी ये सुनहरी किरणें जितनी सुंदर हैं, तेरा स्पर्श भी उतना ही शीतल है।

किसी का अपना न होकर भी तू सबका है। किसी का मामा, किसी की प्रियतमा, तो किसी के सपनों का स्वर्ग। तुझे दिखाकर माँ कभी अपने बच्चे को बहला लेती है, तो कभी प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ सपनों की दुनिया बुनता है।

लेकिन न यह रोशनी तेरी है और न ही यह शीतलता तेरी। तेरा अपना अगर कुछ है, तो वह है तेरे बदन का वह काला दाग। पूर्णिमा से अमावस्या और फिर अमावस्या से पूर्णिमा तक, हर दिन तेरा रूप अलग-अलग होता है।

परंतु तू तो सबका प्रिय चाँद है। शायद अपने काले दाग को सबके सामने स्वीकार करने और सूर्य के अस्तित्व पर प्रश्न न उठाकर उसे सम्मान देने के गुण ने ही तुझे आज महान और सबका चहेता बनाया है।

नहीं, अब और ईर्ष्या नहीं होती, बल्कि मन करता है तुझसे सीखने का; तेरी तरह विनम्र बनने का, तेरी तरह शीतल होने का, तेरी तरह रोशनी बाँटने का... और शायद तेरी तरह सबसे थोड़ा प्यार पाने का।

****

सरबजीत कौर
वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा

डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य

वर्तमान समय को 'डिजिटल युग' के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसमें स्मार्टफोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे जीवन के लगभग हर पहलू को प्रभावित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और वैश्विक संचार नेटवर्कों ने ज्ञान, सूचना और संवाद की गति को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ाया है। इस व्यापक प्रभाव से भाषाएँ भी अछूती नहीं रही हैं, जिससे मातृभाषा का महत्व और भी अधिक प्रासंगिक तथा गहन हो गया है। हमारी मातृभाषा हिंदी के लिए वर्तमान परिदृश्य चुनौतियों के साथ-साथ स्वर्णिम अवसरों से भी परिपूर्ण प्रतीत होता है।

हिंदी की डिजिटल यात्रा असंख्य चुनौतियों से घिरी हुई है। इस डिजिटल युग में तकनीकी बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता और हिंदी सामग्री की गुणवत्ता में कमी जैसे कई कारक हिंदी को उसकी क्षमता के अनुरूप एक उपयोगी माध्यम बनने से रोकते हैं। सुविधा के लिए लोग अंग्रेजी या रोमन लिपि का उपयोग करके हिंदी लिखने को प्राथमिकता देते हैं, जो हिंदी की शुद्धता और मानकीकरण के लिए खतरा उत्पन्न करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक भी भारतीय भाषाओं को पूरी तरह से संशोधित करने में अभी तक सक्षम नहीं है, जिससे ऐसी सामग्री में गहराई और विश्वसनीयता का अभाव होता है। पाठकों के साथ-साथ वैश्विक ज्ञान के प्रसार हेतु आवश्यक वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षणिक सामग्री की हिंदी भाषा में कमी एक बड़ी बाधा है। अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण हिंदी का प्रयोग सीमित हो जाता है। हालाँकि, ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में, जहाँ हिंदीभाषी अधिक हैं, सामग्री का तेज़ी से विस्तार किया जा रहा है।

आज डिजिटल युग में मातृभाषा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। यदि हम तकनीकी प्रगति के साथ अपनी भाषा का भी विकास करें और डिजिटल माध्यमों में उसका अधिक उपयोग करें, तो हम आधुनिकता और परंपरा के बीच एक संतुलन बनाए रख सकते हैं। यह संतुलन ही हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है और हमारी सच्ची पहचान है। चाहे कोई भी युग हो, मातृभाषा का भविष्य सदैव उज्जवल रहेगा।

तकनीकी नवाचार, गुणवत्तापूर्ण सामग्री और सामुदायिक सहयोग का समर्थन मिलने पर हमारी मातृभाषा, जो संभावनाओं से भरी हुई है, विश्वस्तर पर भी एक प्रभावशाली डिजिटल भाषा बन सकती है। परिवर्तन के साथ हमारी मातृभाषा नए रूपों में विकसित और समृद्ध होगी।

****

राजेश कुमार निषाद
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

प्रशासनिक कार्यों में मातृभाषा का महत्व

मातृभाषा राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक अस्मिता को सशक्त बनाती है। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पहचान, संस्कृति और आत्मगौरव का आधार भी है। प्रशासन किसी भी देश की रीढ़ होता है, और इसकी सफलता प्रभावी संचार पर निर्भर करती है। ऐसी स्थिति में, प्रशासनिक कार्यों में मातृभाषा का उपयोग केवल सुविधा का विषय नहीं, बल्कि सुशासन, पारदर्शिता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का एक महत्वपूर्ण साधन है।

प्रशासन में मातृभाषा की आवश्यकता:

1. कार्यकुशलता में वृद्धि:

प्रशासनिक कार्यों में मातृभाषा का प्रयोग कार्यकुशलता को बढ़ाता है। चूंकि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में सोचते और समझते हैं, इसलिए आदेश, अधिसूचनाएँ, नियमावलियाँ और फाइल-नोटिंग यदि मातृभाषा में हों, तो कर्मचारियों को उन्हें समझने में आसानी होती है। इससे त्रुटियों में कमी आती है और प्रक्रिया अधिक तीव्र व प्रभावी बनती है, जिससे प्रशासन की गति में सुधार होता है। परिणामस्वरूप, निर्णय लेने की गति और गुणवत्ता दोनों में सुधार होता है।

2. सुशासन और पारदर्शिता:

मातृभाषा प्रशासन को जनसुलभ बनाती है। लोकतंत्र में शासन का उद्देश्य जनता की सेवा करना है। यदि सरकारी योजनाएँ, नीतियाँ और सूचनाएँ मातृभाषा में उपलब्ध हों, तो उनकी पहुँच और प्रभावशीलता बढ़ती है। इससे नागरिकों की भागीदारी सशक्त होती है और शासन के प्रति जनता का विश्वास सुदृढ़ होता है। भाषा की बाधा दूर होने पर पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की भावना मजबूत होती है। आम नागरिक अपनी भाषा में दी गई जानकारी को अधिक आसानी से समझ पाते हैं, जिससे सरकारी योजनाओं और नीतियों का लाभ सही व्यक्ति तक पहुँचता है।

3. समानता और लोकतांत्रिक मूल्य:

मातृभाषा राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक अस्मिता को सुदृढ़ करती है। अपनी भाषा में प्रशासनिक कार्य करना आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। यह उपनिवेशवादी मानसिकता से मुक्ति का भी प्रतीक है, जहाँ विदेशी भाषा को श्रेष्ठता का प्रतीक माना जाता था। मातृभाषा का सम्मान सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है और विविधता में एकता की भावना को मजबूत करता है।

4. कार्यकुशलता और क्षमता विकास:

मातृभाषा वह भाषा है जिसमें व्यक्ति जन्म से सोचता, समझता और अपनी भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त करता है। इसलिए प्रशासनिक कार्यों में मातृभाषा का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। जब आदेश, अधिसूचनाएँ, नियम, परिपत्र और कार्यालयी पत्राचार मातृभाषा में होते हैं, तो कर्मचारियों को उन्हें समझने में सुविधा मिलती है और कार्य निष्पादन में तेजी आती है। इससे प्रक्रिया तेज होती है और प्रशासन पारदर्शी व प्रभावी बनता है। अतः मातृभाषा को प्रशासन में प्रोत्साहित करना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

5. सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय एकता:

भाषा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। अपनी मातृभाषा में प्रशासनिक कार्य करना सांस्कृतिक गौरव और आत्मसम्मान का प्रतीक है। यह उपनिवेशवादी मानसिकता से मुक्ति का भी संकेत है, जहाँ विविध भाषाओं को सम्मान देकर "विविधता में एकता" की भावना को सुदृढ़ किया जा सकता है।

6. इरेडा में मातृभाषा का उपयोग और महत्व:

इरेडा का कार्यक्षेत्र देशभर में फैला हुआ है, जिसमें विभिन्न राज्यों की परियोजनाएँ और उद्यमी शामिल होते हैं। यदि प्रशासनिक संचार मातृभाषा में किया जाए, तो लाभार्थियों, परियोजना उद्यमियों और अन्य हितधारकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित होता है। इससे पारदर्शिता बढ़ती है और संस्थान के प्रति विश्वास मजबूत होता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत इरेडा में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाता है।

****

पीयूष कुमार अरोड़ा
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना), इरेडा

अस्थिर समय में ऊर्जा संप्रभुता: ईरान-अमेरिका संघर्ष के बीच भारत की नवीकरणीय ऊर्जा रणनीति

वर्तमान युग में, नवीकरणीय ऊर्जा एक पर्यावरणीय विकल्प से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरी है। हाल के वैश्विक संघर्षों और ऊर्जा संकटों ने आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भर देशों की कमजोरियों को उजागर किया है, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा नीतियों का "सुरक्षाकरण" हुआ है।

ईरान-अमेरिका संघर्ष के हालिया संदर्भ में, नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बदलाव अब केवल एक पर्यावरणीय लक्ष्य नहीं, बल्कि तत्काल राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक अस्तित्व का विषय बन गया है। शत्रुतापूर्ण गतिविधियों के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य प्रभावी ढंग से बंद हो गया है, जिससे सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और कतर जैसे प्रमुख उत्पादकों से निर्यात बाधित हुआ है। मार्च 2026 की शुरुआत में, ब्रेंट कच्चे तेल की कीमत $120 प्रति बैरल से अधिक हो गई, जबकि तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) की कीमतों में 50% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई।

I. ऊर्जा सुरक्षा और संप्रभुता

नवीकरणीय ऊर्जा विशेष रूप से उन देशों में रहने वाली वैश्विक आबादी के बड़े हिस्से के लिए स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती है, जो जीवाश्म ईंधन के शुद्ध-आयातक हैं।सौर और पवन ऊर्जा के माध्यम से घरेलू स्तर पर बिजली का उत्पादन करके, राष्ट्र तेल उत्पादक क्षेत्रों में भू-राजनीतिक तनावों के कारण होने वाले अप्रत्याशित मूल्य उतार-चढ़ाव और आपूर्ति के झटकों से अपनी अर्थव्यवस्थाओं को बचा सकते हैं।केंद्रीकृत जीवाश्म ईंधन संयंत्रों के विपरीत, वितरित नवीकरणीय प्रणालियाँ (जैसे माइक्रोग्रिड) राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे पर भौतिक और साइबर हमलों के प्रति अधिक प्रतिरोधी हैं।जीवाश्म ईंधन के विपरीत, नवीकरणीय ऊर्जा (सूर्य और पवन) का "ईंधन" मुफ्त और आंतरिक रूप से उपलब्ध है। रूस-यूक्रेन संघर्ष से उत्पन्न 2022 के यूरोपीय ऊर्जा संकट ने आर्थिक और ऊर्जा संप्रभुता के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को तेजी से तैनात करने की योजनाओं को गति दी।

II. वैश्विक शक्ति गतिशीलता में बदलाव

यह परिवर्तन केवल संसाधन स्वामित्व के बजाय तकनीकी नेतृत्व पर आधारित एक नया भू-राजनीतिक परिदृश्य बना रहा है। चीन, भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश स्वच्छ ऊर्जा बुनियादी ढांचे और विनिर्माण में बड़े पैमाने पर निवेश के माध्यम से खुद को नए ऊर्जा नेताओं के रूप में स्थापित कर रहे हैं।

III. नए भू-राजनीतिक जोखिम

जबकि नवीकरणीय ऊर्जा तेल पर निर्भरता कम करती है, वे लिथियम, कोबाल्ट और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों जैसे महत्वपूर्ण सामग्रियों पर एक नई निर्भरता पैदा करती हैं।इन खनिजों का खनन और प्रसंस्करण कुछ देशों में अत्यधिक केंद्रित है, जिससे "संसाधन राष्ट्रवाद" और आपूर्ति श्रृंखलाओं के शस्त्रीकरण की नई क्षमता उत्पन्न होती है।इन सामग्रियों पर प्रतिस्पर्धा और हरित प्रौद्योगिकियों के निर्माण से पहले से ही व्यापार विवाद और संरक्षणवादी नीतियां बढ़ रही हैं।

IV. सशस्त्र संघर्षों का प्रभाव

संघर्ष और नवीकरणीय ऊर्जा के बीच संबंध जटिल और अक्सर "द्विदिशात्मक" होता है।शुद्ध-आयातकों के लिए, उच्च भू-राजनीतिक जोखिम अक्सर आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए एक रक्षात्मक सुरक्षा उपाय के रूप में नवीकरणीय ऊर्जा में संक्रमण को तेज करता है। सक्रिय रूप से युद्धग्रस्त क्षेत्रों में, सशस्त्र संघर्ष बुनियादी ढांचे को नष्ट करके और सरकारी धन को सैन्य खर्च की ओर मोड़कर नवीकरणीय निवेश को काफी कम कर देता है।

V. आर्थिक और सामाजिक स्थिरता

नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण को तेजी से "न्यायसंगत" विकास और वैश्विक स्थिरता के लिए एक इंजन के रूप में देखा जा रहा है।अनुमान है कि यह क्षेत्र 2030 तक लाखों लोगों को रोजगार देगा, जो जीवाश्म ईंधन की तुलना में प्रति डॉलर तीन गुना अधिक नौकरियां प्रदान करता है।विकासशील क्षेत्रों में, विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा वर्तमान में बिना बिजली वाले लोगों के लिए विद्युतीकरण का सबसे व्यवहार्य मार्ग प्रदान करती है, जिससे स्वास्थ्य और शिक्षा के परिणामों में सुधार होता है।

नवीकरणीय ऊर्जा के माध्यम से भारतीय रणनीति

भारत इतिहास के सबसे गंभीर वैश्विक ऊर्जा संकट का सामना कर रहा है। ईरान-अमेरिका संघर्ष (मार्च 2026) के हालिया संदर्भ में, जिसने होर्मुज जलडमरूमध्य को वाणिज्यिक शिपिंग के लिए प्रभावी ढंग से बंद कर दिया है, भारत तत्काल ऊर्जा अस्तित्व और दीर्घकालिक संरचनात्मक संक्रमण की दोहरी रणनीति अपना रहा है:

भारत एक ऐसे मील के पत्थर पर पहुंच गया है जहाँ उसकी कुल बिजली क्षमता का 51% से अधिक गैर-जीवाश्म स्रोतों से आता है। हर साल "ईंधन" आयात करने के बजाय, भारत सौर पैनल और पवन टर्बाइन का निर्माण कर रहा है, जो फिर 25+ वर्षों के लिए ऊर्जा प्रदान करते हैं।घरेलू सौर और पवन परियोजनाएं अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों या समुद्री

नाकेबंदी से प्रतिरक्षित हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अस्पताल और जल प्रणाली जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे चालू रहें।राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का उद्देश्य उर्वरक और इस्पात उत्पादन में आयातित एलएनजी को प्रतिस्थापित करना है, जो वर्तमान में खाड़ी तनाव के कारण आपूर्ति की कमी का सामना कर रहे हैं।सिंचाई पंपों को सौर ऊर्जा से संचालित करने से किसानों की डीजल पर निर्भरता कम हो जाती है, जो वर्तमान में आपातकालीन आपूर्ति नियमों के अधीन है।

तेजी से बढ़ता ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) बुनियादी ढांचा/चार्जिंग स्टेशन परिवहन क्षेत्र को आयातित पेट्रोल के बजाय घरेलू धूप और हवा पर चलने की अनुमति देता है। पीएम सूर्य घर योजना के तहत परिवारों ने रूफटॉप सोलर अपनाया है, जिससे एक विकेन्द्रीकृत ग्रिड बन गया है जिसे बड़े केंद्रीय बिजली संयंत्रों की तुलना में विरोधियों के लिए बाधित करना कठिन है।कच्चे तेल की आपूर्ति जारी है। घरों और खेतों के लिए गैस को प्राथमिकता दी जा रही है। एलपीजी उत्पादन में 28% की वृद्धि की गई है। उपभोक्ता कीमतें बाजार और क्षेत्रीय मानकों के अनुमान से काफी कम हैं। स्कूल खुले हैं। पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल उपलब्ध है। हर नागरिक, चाहे वह किसी भी राजनीतिक दल से जुड़ा हो, इस प्रयास में भागीदार है।भारत का हर नागरिक आज अपने ऊर्जा योद्धाओं, इस संकट का प्रबंधन करने वाली संस्थाओं और राष्ट्रीय हित के साथ एकजुट होकर खड़ा है, और यही हर भारतवासी की असली पहचान है।

****

ऋषभ मंगल
प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

कार्बन फुटप्रिंट: क्या हम सच में जागरूक हैं?

यह शब्द अब नया नहीं रहा। "कार्बन फुटप्रिंट" आज हमारे समय का एक परिचित, लगभग सर्वव्यापी शब्द बन चुका है—समाचारों की सुर्खियों से लेकर सोशल मीडिया की टाइमलाइन और कॉरपोरेट प्रस्तुतियों तक—लेकिन सवाल यह है कि क्या यह शब्द हमारी चेतना में भी उतनी ही गहराई से उतरा है, जितना हमारी बातचीत में? कार्बन फुटप्रिंट केवल एक वैज्ञानिक परिभाषा नहीं, बल्कि हमारे रोज़मर्रा के निर्णयों का अदृश्य हिसाब-किताब है—वह उत्सर्जन जो बिजली के स्विच ऑन करने से, निजी वाहन स्टार्ट करने से, एयर कंडीशनर को न्यूनतम तापमान पर सेट करने से, या देर रात की एक अनायास ऑनलाइन खरीदारी से वातावरण में घुलता चला जाता है।

डिजिटल युग सुविधाजनक है, लेकिन इस सुविधा का पारिस्थितिक मूल्य भी है, और वह मूल्य अक्सर हमारी आँखों से ओझल रहता है, क्योंकि एक साधारण-सा ऑनलाइन ऑर्डर हमारे दरवाज़े तक पहुँचने से पहले पैकेजिंग, गोदाम, ट्रक, ईंधन और ऊर्जा की एक जटिल श्रृंखला से गुजरता है—एक ऐसी श्रृंखला जो हमारे क्लिक से कहीं अधिक कार्बन-गहन होती है। क्या हमने कभी इसकी कल्पना की? हम जल्दबाज़ हो गए हैं। छोटी दूरी के लिए भी हम दोपहिया या कार का उपयोग करते हैं, मानो पैदल चलना या साइकिल चलाना किसी पुराने युग की निशानी हो, जबकि सच यह है कि सप्ताह में केवल एक-दो दिन सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का चयन करना हमारे व्यक्तिगत उत्सर्जन को उल्लेखनीय रूप से कम कर सकता है।

बदलाव कठिन नहीं। बस असुविधाजनक लगता है। कार्यालय भी अछूते नहीं हैं। एयर कंडीशनर का अनावश्यक उपयोग, खाली कमरों में जलती लाइटें, लगातार प्रिंट होते कागज़—ये सब हमारी आदतों की जड़ता को दर्शाते हैं, और यदि हर कर्मचारी केवल "स्विच ऑफ" का छोटा-सा संकल्प ले ले, तो ऊर्जा बचत एक सामूहिक आंदोलन का रूप ले सकती है। छोटा कदम। बड़ा प्रभाव। समस्या सिर्फ़ ऊर्जा नहीं है; यह हमारी उपभोग प्रवृत्ति की कहानी भी है—"यूज़ एंड थ्रो" की संस्कृति, तेज़ फैशन का आकर्षण, हर नए गैजेट के प्रति लगभग आवेगपूर्ण लालसा—जो उत्पादन, परिवहन और अंततः उत्सर्जन की अनवरत धारा को बढ़ावा देती है। क्या हमें सचमुच हर नया मॉडल चाहिए, या यह

केवल क्षणिक उत्साह है? युवा आवाज़ें बुलंद हैं; सोशल मीडिया पर अभियान चल रहे हैं, वृक्षारोपण कार्यक्रमों की तस्वीरें साझा हो रही हैं, इलेक्ट्रिक वाहनों की लोकप्रियता बढ़ रही है—और यह उत्साह आश्वस्त करता है—लेकिन यदि यह सब केवल ट्रेंड बनकर रह जाए, तो परिवर्तन सतही रह जाएगा। जागरूकता पोस्ट नहीं, व्यवहार है। नीतियाँ बन रही हैं; सरकारें सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा दे रही हैं, ग्रीन बिल्डिंग को प्रोत्साहन मिल रहा है, वित्तीय संस्थान हरित निवेश की दिशा में अग्रसर हैं, परंतु इन पहलों की सफलता अंततः नागरिकों की सहभागिता पर निर्भर करती है, क्योंकि नीतियाँ दिशा दे सकती हैं, कदम हमें ही बढ़ाने होंगे। यही वास्तविक परीक्षा है।

अंतिम प्रश्न सरल है: क्या हम एसी का तापमान 24–26 डिग्री पर रखने का प्रयास करते हैं, क्या हम ऊर्जा दक्ष उपकरणों को प्राथमिकता देते हैं, क्या हम प्लास्टिक के विकल्प तलाशते हैं—या हम केवल चर्चा में पर्यावरण-प्रेमी हैं और व्यवहार में सुविधाप्रेमी? उत्तर असहज हो सकता है। सच थोड़ा चुभता है। कार्बन फुटप्रिंट केवल पर्यावरण का विषय नहीं; यह हमारी जीवनशैली का दर्पण है, जो हमें दिखाता है कि हम सुविधा को कितना महत्त्व देते हैं और भविष्य की पीढ़ियों के प्रति कितने उत्तरदायी हैं, और शायद यही वह क्षण है जब हमें जानकारी से आगे बढ़कर संकल्प की ओर बढ़ना चाहिए। क्रांति नहीं चाहिए। बस छोटे-छोटे व्यक्तिगत निर्णय—कम उपभोग, अधिक जागरूकता, थोड़ी-सी असुविधा स्वीकार करने का साहस—और यहीं से एक हरित, सतत भविष्य की वास्तविक शुरुआत हो सकती है।

****

रोमेश कुमार गुप्ता
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा विभाग) इरेडा

अक्षय संकल्प: जब संख्याएँ मुस्कुराने लगीं

दिल्ली की चिलचिलाती धूप और दफ्तर के बंद कमरों में जब राघव अपनी फाइलों में डूबा रहता था, तो उसे अक्सर लगता था कि उसकी दुनिया बस डेबिट, क्रेडिट और बैलेंस शीट के इर्द-गिर्द सिमट कर रह गई है। इरेडा (इरेडा) जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में एक वित्त अधिकारी के तौर पर, उसके लिए दिन का मतलब था—हजारों करोड़ के ऋण प्रस्तावों का विश्लेषण करना और तकनीकी व्यवहार्यता की जांच करना। कभी-कभी उसे लगता कि यह सब कितना नीरस है। आंकड़ों के इस समंदर में वह अक्सर उस 'मकसद' को भूल जाता था जिसके लिए यह सब किया जा रहा था।

एक दिन, उसे राजस्थान के एक सुदूर सीमावर्ती गांव 'धोलावाड़ा' में एक हाइब्रिड (पवन और सौर) ऊर्जा परियोजना के निरीक्षण के लिए भेजा गया। यह वही प्रोजेक्ट था जिसकी फाइल राघव ने कुछ महीने पहले ही अपनी डेस्क पर 'क्लियर' की थी। बस, एक हस्ताक्षर। अब मौके पर जाना था। जीप में बैठे रेगिस्तान पार करते हुए उसे लगा, शायद यह यात्रा उसकी एकरसता तोड़े।

जब राघव वहां पहुँचा, तो दृश्य अद्भुत था। मीलों तक फैले रेगिस्तान में विशालकाय पवन चक्कियां किसी योद्धा की तरह खड़ी थीं, और उनके साथ ही बिछे हुए नीले सौर पैनल सूरज की किरणों को सोखकर उसे ऊर्जा में बदल रहे थे। लेकिन राघव को असली रोमांच तब महसूस हुआ, जब वह गांव के भीतर गया।

गांव के सरकारी स्कूल में शाम का समय था, लेकिन स्कूल बंद नहीं हुआ था। वहां गांव की महिलाएं और बच्चे इकट्ठा थे। राघव ने देखा कि स्कूल की छत पर लगे सोलर पैनल्स की वजह से वहां न केवल रोशनी थी, बल्कि एक छोटा सा कंप्यूटर सेंटर भी चल रहा था। वहां उसे एक 12 साल की बच्ची, 'आरती' मिली, जो बड़े चाव से कंप्यूटर पर कुछ टाइप कर रही थी।

राघव ने उससे पूछा, "बेटा, अंधेरा होने वाला है, तुम घर नहीं जाओगी? माँ चिंतित होंगी।"

आरती ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "साहब, पहले तो सूरज ढलते ही पढ़ाई भी ढल जाती थी। ढिबरी (मिट्टी के तेल का दीपक) के धुएं में आंखें जलती थीं। लेकिन अब हमारे पास अपना 'सूरज' है, जो रात को भी चमकता है। मुझे बड़ी होकर इंजीनियर बनना है ताकि मैं भी ऐसी ही मशीनें लगा सकूँ।"

उस छोटी सी बच्ची की आंखों में जो चमक थी, उसने राघव के भीतर कुछ बदल दिया। उसे अचानक अहसास हुआ कि जिन फाइलों को वह 'बोरिंग' समझता था, वे दरअसल आरती जैसे लाखों बच्चों के सपनों का आधार थीं। वह जो 'कैश फ्लो' कैलकुलेट करता था, वह सिर्फ गणित नहीं था, वह उस ईंधन का हिस्सा था जो भारत के भविष्य को रोशन कर रहा था।

वापस लौटते वक्त, उड़ती हुई रेत के बीच जब उसने उन घूमती हुई पवन चक्कियों को देखा, तो उसे लगा जैसे वे उससे कह रही हों—"हम सिर्फ बिजली नहीं बना रहे, हम एक नया भारत बना रहे हैं।"

दफ्तर लौटकर जब राघव अपनी मेज पर बैठा, तो उसके सामने फिर से वही बैलेंस शीट थी। लेकिन इस बार उसे उसमें सिर्फ नंबर नहीं दिख रहे थे। उसे उन नंबरों के पीछे मुस्कुराहटें, साफ़ हवा और आरती का वो आत्मविश्वास भरा चेहरा दिखाई दे रहा था। उसे समझ आया कि 'अक्षय ऊर्जा' का मतलब सिर्फ वो बिजली नहीं है जो कभी खत्म न हो, बल्कि इसका असली मतलब है—वो 'उम्मीद' जो कभी खत्म न हो।

आज राघव गर्व से कहता है कि वह इरेडा का हिस्सा है। वह अब सिर्फ के ऋण प्रस्तावों का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि भारत को 'नेट जीरो' बनाने के संकल्प को सींचता है। 'अक्षय क्रांति' सिर्फ एक मैगजीन का नाम नहीं, बल्कि एक ऐसी लहर है जिसमें हर भारतीय को शामिल होना है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को हम एक ऐसा ग्रह दे सकें जो न केवल हरा-भरा हो, बल्कि ऊर्जा से भरपूर भी हो।

हमारी मेहनत तब सफल होती है जब वह समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में उजाला लाती है। अक्षय ऊर्जा यही उजाला है।

****

पीयूष अग्रवाल
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा विभाग), इरेडा

मातृभाषा की महिमा

मातृभाषा की महिमा निराली, मन की सच्ची पहचान,

शब्दों में बसती है संवेदना, यही है अपनी शान।

माँ की बोली, पहला स्वर, जीवन का पहला गीत,

इसी से जागे ज्ञान की ज्योति, इसी से मिले प्रीत।

इरेडा में जब गूँजे हिंदी, बढ़े आत्मविश्वास,

अपनापन भर दे हर दिल में, मिटे सभी संकोच-विलास।

इरेडा में हम सब मिलकर करें यह संकल्प महान,

मातृभाषा का मान बढ़ाएँ, यही हो अपनी पहचान।

हरित ऊर्जा की तरह शब्द भी फैलें, उजियारा करें चारों ओर,

हिंदी में सोचें-लिखें, बढ़े प्रगति की डोर।

हिंदी से जुड़े रहेंगे, यही हमारा मान,

भाषा, संस्कृति, कर्म से होगा अपना भारत महान।

विराट चौधरी
प्रबंधक (परियोजना), इरेडा

प्रकृति से प्रगति का सूत्र: भारतीय संस्कृति और अक्षय ऊर्जा का पुनर्जागरण

भूमिका: परंपरा की प्रतिध्वनि

इतिहास केवल बीती हुई घटनाओं का लेखा-जोखा नहीं होता, बल्कि वह भविष्य के निर्माण की नींव होता है। भारत की पावन धरा पर जब हम 'संस्कृति' शब्द का उच्चारण करते हैं, तो इसका अर्थ केवल कला या नृत्य नहीं होता, बल्कि इसका अर्थ है 'प्रकृति के साथ जीने की कला'। प्राचीन भारत में विकास की अवधारणा 'विनाश' पर आधारित नहीं थी, बल्कि वह 'सह-अस्तित्व' (Co-existence) पर टिकी थी। आज जब पूरी दुनिया 'क्लाइमेट चेंज' और कार्बन उत्सर्जन की चिंता में डूबी है, तब भारत का गौरवशाली अतीत हमें याद दिलाता है कि हम सदैव से एक 'ग्रीन सिविलाइजेशन' रहे हैं।

सिंधु से गंगा तक: सस्टेनेबिलिटी का वैज्ञानिक इतिहास

भारतीय उपमहाद्वीप के भूगोल ने हमारी संस्कृति को आकार दिया है। हिमालय से निकलने वाली सदानीरा नदियाँ और प्रायद्वीपीय भारत के पठारों ने हमें सिखाया कि ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत प्रकृति ही है।

1. **वैदिक काल और प्राकृतिक ऊर्जा का दर्शन:** ऋषियों ने सूर्य को 'मित्र' कहा, क्योंकि वे जानते थे कि पृथ्वी पर ऊर्जा का अंतिम और अक्षय स्रोत सूर्य ही है। भारतीय संस्कृति में सूर्य को ब्रह्मांड की 'आत्मा' माना गया है। आज जब पूरी दुनिया फोटोवोल्टिक (Photovoltaics) तकनीक की ओर मुड़ रही है, प्राचीन भारतीयों ने 'सौर अभिविन्यास' (Solar Orientation) के माध्यम से सौर ऊर्जा का उपयोग किया—जिसके तहत मंदिरों और अन्न भंडारों को इस तरह संरेखित किया जाता था कि प्राकृतिक प्रकाश और ऊष्मा का अधिकतम लाभ मिल सके, जिससे कृत्रिम ईंधन की आवश्यकता कम हो जाती थी।

2. **प्राचीन भारत की ऊर्जा दक्षता: कुछ अनछुए पहलू**

भारत में कृषि और कुटीर उद्योगों में ऐसी तकनीकों का उपयोग होता था जो पूरी तरह 'नेट-जीरो' थीं:

- **पशु-शक्ति का उपयोग:** बैलगाड़ियों और कोल्हू के माध्यम से हमने परिवहन और उत्पादन में ऐसी ऊर्जा का उपयोग किया जो प्रदूषण मुक्त थी।
- **मिट्टी के बर्तन और प्राकृतिक रेफ्रिजरेशन:** 'घड़े' के पीछे का वाष्पीकरण (Evaporation) सिद्धांत आज के महंगे रेफ्रिजरेटरों का एक स्थायी और पर्यावरण अनुकूल विकल्प रहा है।
- **जैविक ईंधन:** ग्रामीण भारत में गोबर की खाद और बायोगैस का उपयोग सदियों से हो रहा है, जो चक्रीय अर्थव्यवस्था (Circular Economy) का सटीक उदाहरण है।

3. मध्यकालीन भारत: संसाधनों का संयमित दोहन

मध्यकाल के दौरान, भारत के किलों और महलों की बनावट में प्राकृतिक प्रकाश (Daylighting) और वेंटिलेशन का विशेष ध्यान रखा गया। गोलकुंडा के किले में ध्वनि तरंगों का उपयोग कर संदेश भेजना या झरोखा पद्धति से हवा के दबाव (Wind pressure) को नियंत्रित करना, यह दर्शाता है कि हमारे पूर्वजों को भौतिक विज्ञान (Physics) का व्यावहारिक ज्ञान था। उन्होंने कभी प्रकृति को 'गुलाम' बनाने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसके साथ 'सामंजस्य' बिठाया।

4. **जल-प्रबंधन और स्थापत्य का चमत्कार:** धोलावीरा के अवशेषों को देखें तो आश्चर्य होता है कि 5000 साल पहले हमारे पूर्वज जानते थे कि मरुस्थलीय क्षेत्रों में वर्षा की एक-एक बूंद को कैसे सहेजना है। राजस्थान की 'बावड़ियाँ' केवल जल-स्रोत नहीं थीं, वे परिष्कृत भूमिगत सूक्ष्म-जलवायु (Subterranean Microclimates) के केंद्र थे, जो वाष्पीकरण द्वारा शीतलन (Evaporative Cooling) एवं भू-तापीय ऊर्जा (Geothermal cooling) के माध्यम से तापीय आराम प्रदान करते थे। गर्मियों में इन बावड़ियों के तल पर तापमान बाहर की तुलना में 5-6 डिग्री कम रहता था। चेट्टीनाड के विशाल आंगनों से लेकर राजस्थान के किलों की जटिल 'जाली' के काम तक, भारतीय वास्तुकला को ऊर्जा प्रबंधन के लिए ही तैयार किया गया था। ये संरचनाएं 'वेंचुरी प्रभाव' (Venturi Effect) का उपयोग करती थीं—जिसमें संकीर्ण छिद्रों के माध्यम से हवा के प्रवाह की गति को बढ़ाया जाता था—जिससे बिना किसी बिजली के प्राकृतिक शीतलन प्रणाली (Natural Cooling System) निर्मित होती थी। क्या यह बिना बिजली के 'एयर कंडीशनिंग' का अद्भुत उदाहरण नहीं है?

आज की चुनौती: आधुनिक भारत और ऊर्जा का संकट

औद्योगिक क्रांति के बाद, पूरी दुनिया ने कोयले और तेल पर निर्भरता बढ़ा ली। परिणामतः, आज हम ग्लोबल वार्मिंग के मुहाने पर खड़े हैं। भारत, जिसकी जनसंख्या और विकास की आकांक्षाएं विशाल हैं, अब फिर से अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है। लेकिन यह 'लौटना' पीछे हटना नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक के साथ प्राचीन ज्ञान का संगम करना है।

अक्षय ऊर्जा: भारत का नया संकल्प

आज का भारत विश्व में 'सोलर एलायंस' का नेतृत्व कर रहा है। हमने लक्ष्य रखा है कि हम 2070 तक 'नेट जीरो' उत्सर्जन वाला देश बनेंगे। यह संकल्प केवल सरकारी फाइलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक लोकाचार 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरी दुनिया एक परिवार है) का विस्तार है। यदि हम पृथ्वी को बचाते हैं, तो हम मानवता को बचाते हैं।

इरेडा: हरित क्रांति का वित्तीय आधार

इस पूरी यात्रा में, **भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी लिमिटेड (इरेडा)** एक मूक नायक (Silent Hero) की भूमिका निभा रहा है। किसी भी बड़े बदलाव के लिए संसाधनों और वित्त की आवश्यकता होती है। 1987 में अपनी स्थापना के बाद से, इरेडा ने भारत में अक्षय ऊर्जा के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है।

- **नवाचार और उद्यमिता:** यह केवल एक वित्तीय संस्था नहीं है, बल्कि यह एक 'कैटालिस्ट' (उत्प्रेरक) है। **इरेडा** ने 'नवीन और नवीकरणीय' स्रोतों की क्षमता को उस समय पहचाना, जब उन्हें केवल एक 'वैकल्पिक' विकल्प माना जाता था। मियादी ऋण (Term loans) और अभिनव वित्तीय योजनाएँ प्रदान करके, इसने निजी निवेशकों के लिए इस क्षेत्र के जोखिम को कम किया है। विशाल पवन ऊर्जा परियोजनाओं को सहायता देने से लेकर किसानों के लिए विकेंद्रीकृत सौर पंपों (PM-KUSUM) को बढ़ावा देने तक, **इरेडा** यह सुनिश्चित करता है कि 'ऊर्जा न्याय' समाज की अंतिम कतार तक पहुँचे।
- **नेट-जीरो की ओर अग्रसर:** जैसे-जैसे भारत अपने 2070 के 'नेट-जीरो' लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, **इरेडा** सरकारी नीतियों और धरातलीय कार्यान्वयन के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। यह कार्बन-प्रधान अर्थव्यवस्था से एक चक्रीय और टिकाऊ अर्थव्यवस्था की ओर ले जाने वाला मुख्य इंजन है।
- **सतत भविष्य की गारंटी:** ऊर्जा सदैव ' के अपने ध्येय वाक्य को सार्थक करते हुए, **इरेडा** सुनिश्चित कर रही है कि भारत का विकास पहिया कभी न रुके, और पर्यावरण का फेफड़ा कभी न सूखे।

निष्कर्ष: परंपरा और आधुनिकता का सेतु

अंततः, हमें यह समझना होगा कि भविष्य 'पुनर्चक्रण' (Recycling) में है। जो सूर्य हमारे पूर्वजों के लिए देवता था, वही आज हमारे लिए अक्षय ऊर्जा का स्रोत है। जो पवन हमारे लिए 'मारुत' थी, वही आज हमारे टर्बाइनों को घुमा रही है।

भारत का इतिहास हमें सिखाता है कि हम प्रकृति के मालिक नहीं, उसके संरक्षक हैं। **इरेडा** जैसी संस्थाओं के माध्यम से और अक्षय ऊर्जा को अपनाकर, हम उसी प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जहाँ प्रगति की गूँज हो, लेकिन पर्यावरण की खामोशी भी सुरक्षित रहे।

****

अनुष्का कुमारी
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

नारी: शक्ति और सम्मान

नारी सिर्फ एक नाम नहीं,
शक्ति का वह स्वरूप है।
संघर्षों में भी जो मुस्काए,
वही जीवन का रूप है।

ममता की कोमल छाया भी,
हिम्मत की वह दीवार है।
हर मुश्किल में आगे बढ़ती,
नारी सच्चा आधार है।

सपनों को सच करती जाए,
हर सीमा को पार करे।
अपने साहस और विश्वास से,
नई दिशा संसार करे।

सम्मान, समानता और अधिकार,
यही उसका सच्चा मान।
नारी से ही रोशन होता,
हर परिवार और हर जहान।

नारी है शक्ति, नारी है सम्मान,
उससे ही चमकता है सारा संसार।

****

रिजवान अथर
उप प्रबंधक (परियोजना), इरेडा

सौर पार्क : भारत की ऊर्जा क्रांति के आधारस्तंभ

भारत ने पिछले दो दशकों में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में जिस तेज़ी से प्रगति की है, वह उसे दुनिया के अग्रणी देशों की श्रेणी में स्थापित करती है। विशेष रूप से **सौर ऊर्जा** के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय हैं। भौगोलिक विविधता, उष्णकटिबंधीय स्थिति और विशाल भूमि क्षेत्रफल के कारण भारत में सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ निहित हैं।

भारत में औसतन **3.5 से 5.5 किलोवॉट-घंटे/वर्ग मीटर/दिन** तक सौर विकिरण मिलता है—यह विश्व के सर्वोत्तम सौर संसाधनों में से एक है। हिमालय की तलहटी से लेकर राजस्थान के रेगिस्तानों और तमिलनाडु के समुद्री तटों तक फैली यह ऊर्जा क्षमता भारत को सौर उर्जा महाशक्ति बनने का आधार प्रदान करती है।

सौर पार्क क्या होते हैं?

सौर पार्क, जिन्हें *फोटोवोल्टाइक पावर स्टेशन* के रूप में भी जाना जाता है, बड़े पैमाने के ग्रिड से जुड़े पावर प्लांट होते हैं। इनमें—विशाल क्षेत्र में लगे कई सौर पैनल, सबस्टेशन, ट्रांसमिशन लाइन्स और आंतरिक सड़क एवं अन्य अवसंरचना शामिल होती है। इनका लक्ष्य बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा उत्पन्न करना और उसे राष्ट्रीय ग्रिड में जोड़ना है। भारत में सौर पार्क न केवल बिजली उत्पादन बढ़ा रहे हैं, बल्कि रोजगार, स्थानीय विकास और ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूती दे रहे हैं।

भारत के प्रमुख सौर पार्क—एक विस्तृत परिचय

क्रमांक	सौर पार्क	स्थान / राज्य	क्षमता (मेगावाट)	क्षेत्रफल	विशेषताएँ
1	**भडला सोलर पार्क**	जोधपुर, राजस्थान	**2,245 मेगावाट**	लगभग 14,000 एकड़	• विश्व का सबसे बड़ा पूर्णतः चालू सौर पार्क • अत्यधिक सौर विकिरण, न्यूनतम बादल • अत्यंत उच्च दक्षता
2	**पावागड़ा सोलर पार्क**	तुमकुर, कर्नाटक	**2,050 मेगावाट**	13,000 एकड़	• विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सौर पार्क • भूमि लीज़ मॉडल—कम्युनिटी पार्टनरशिप का वैश्विक उदाहरण
3	**कुरनूल अल्ट्रा मेगा सोलर पार्क**	कुरनूल, आंध्र प्रदेश	**1,000 मेगावाट**	5,932 एकड़	• भारत का पहला सौर पार्क जिसमें एक ही परिसर में 1 GW क्षमता स्थापित हुई
4	**एनपी कुंटा / अनंतपुरम सोलर पार्क**	अनंतपुर, आंध्र प्रदेश	**1,500 मेगावाट** (विस्तार सहित)	7,924 एकड़	• भारत के सबसे बड़े नियोजित सोलर ऊर्जा समूहों में से एक
5	**रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर प्रोजेक्ट**	रीवा, मध्य प्रदेश	**750 मेगावाट**	—	• भारत का पहला प्रोजेक्ट जिसने ग्रिड पैरिटी हासिल की • दिल्ली मेट्रो को अंतर-राज्यीय बिजली आपूर्ति • भारतीय रेलवे द्वारा पहली बार सौर ऊर्जा उपयोग

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य: विश्व के शीर्ष सौर पार्क

दुनिया में बड़े सौर पार्क मुख्य रूप से **भारत, चीन, संयुक्त अरब अमीरात, मिस्र** जैसे देशों में केंद्रित हैं।

क्षमता के अनुसार शीर्ष सौर पार्क

1. *5,000 मेगावाट– शिनजियांग/शेंगजू सोलर फार्म (चीन)*
2. *2,245 मेगावाट – भडला सोलर पार्क (भारत)*
3. *2,200 मेगावाट – हुआंगहे हाइड्रोपावर हैनान सोलर पार्क (चीन)*
4. *2,050 मेगावाट – पावागड़ा सोलर पार्क (भारत)*
5. *2,000 मेगावाट – अल-धाफरा सोलर प्रोजेक्ट (UAE)*
6. *1,650 मेगावाट – बेनबान सोलर पार्क (मिस्र)*
7. *1,547 मेगावाट – टेंगर डेजर्ट सोलर पार्क (चीन)*

भारत ना केवल सबसे बड़े सौर पार्कों का घर है, बल्कि कई वैश्विक रिकॉर्ड भी रखता है।

सौर ऊर्जा का पर्यावरणीय प्रभाव

सौर ऊर्जा, CO_2 उत्सर्जन में बड़े पैमाने पर कमी लाती है। उदाहरण के लिए—

- अकेला **भडला सोलर पार्क लगभग 40 मिलियन टन/वर्ष** कार्बन उत्सर्जन कम करता है।
- यह जलवायु परिवर्तन नियंत्रण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, सौर पार्क—जल की कम आवश्यकता, ध्वनि प्रदूषण मुक्त संचालन और स्थानीय तापमान में न्यूनतम प्रभाव जैसे पर्यावरणीय लाभ प्रदान करते हैं।

सौर पार्क भारत की ऊर्जा क्रांति के मूल स्तंभ बन चुके हैं। भौगोलिक विविधता, नीति समर्थन, बड़े निवेश और तकनीकी प्रगति के कारण भारत तेजी से सौर ऊर्जा महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। इन पार्कों की स्थापना से— ऊर्जा लक्ष्य पूरे होंगे, पर्यावरणीय सुधार होंगे, आर्थिक प्रगति को बल मिलेगा, राष्ट्र को स्वच्छ और सस्ती और सुरक्षित ऊर्जा प्राप्त होगी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सौर ऊर्जा भारत के उज्ज्वल भविष्य की असली चमक है।

****

मैत्रेय कुमार श्रीवास्तव
उप प्रबंधक (आईटी), इरेडा

एक्सजेड बैकडोर घटना

मान लीजिए आप एक बड़े अपार्टमेंट में रहते हैं। आप अपने पड़ोसियों को नहीं जानते। आपको यह भी नहीं पता कि इमारत की वायरिंग किस इलेक्ट्रिशियन ने की और तो और, आपको यह भी नहीं पता कि मुख्य दरवाज़े के लॉक के अंदर लगी छोटी सी स्क्रू किस फैक्ट्री में बनी। फिर भी आप इस सब पर भरोसा करते हैं—क्योंकि यह हमेशा ठीक काम करता रहा है। अब कल्पना कीजिए, कोई व्यक्ति महीनों लगाकर उसी स्क्रू फैक्ट्री में नौकरी हासिल कर लेता है। वह शिष्ट है, मेहनती है, मददगार है। धीरे धीरे वह ज़्यादा जिम्मेदारियाँ पाने लगता है और एक दिन वह चुपचाप लॉक के अंदर बस एक स्क्रू बदल देता है—ऐसी स्क्रू जो एक खास उपकरण के प्रयोग द्वारा बिना शोर किए लॉक को खोल सकती है। इमारत में रहने वाले किसी व्यक्ति ने पासवर्ड नहीं बताया, कोई गलती भी नहीं की फिर भी लॉक तो पहले से ही... कमप्रोमाइज्ड हो चुका था।

यह रोज़मर्रा की ज़िंदगी का सबसे नज़दीकी उदाहरण है, जो बताता है कि एक्सजेड बैकडोर घटना में क्या हुआ—एक असली साइबर सुरक्षा घटना जिसने विशेषज्ञों को इसलिए चौंका दिया क्योंकि यह इंटरनेट के उन हिस्सों को निशाना बना रही थी जिनके बारे में ज़्यादातर लोग कभी सोचते भी नहीं।

दूसरा उदाहरण, मान लीजिए आप एक छोटी कैफ़े चलाते हैं। आप गेहूँ नहीं उगाते, आप आटा सप्लायर से खरीदते हैं। वही आटा ब्रेड, केक, कुकीज़—सब में इस्तेमाल होता है। एक दिन सप्लायर गलती से (या जानबूझकर) ऐसा आटा भेज देता है जिसमें कोई खतरनाक दूषित पदार्थ है।

आप सामान्य तरह से बेकिंग करते हैं, सामान्य तरह से ग्राहकों को परोसते हैं... और अचानक आपके कैफ़े की हर चीज़ प्रभावित हो जाती है। यही है सप्लाई चेन समस्या: मुद्दा आपकी रसोई में शुरू नहीं हुआ, लेकिन नुकसान यहीं से फैलता है। सॉफ्टवेयर में "आटा" = डिपेंडेंसीज़ (वो टूल्स और लाइब्रेरीज़ जिन्हें हज़ारों प्रोग्राम इस्तेमाल करते हैं) और एक्सजेड Utils ऐसा ही "आटे का बैग" था जिसे दुनिया भर में लिन्कस सिस्टम उपयोग करते हैं।

इस कहानी का अनपेक्षित किरदार: एक शांत सा टूल ज़्यादातर लोग वायरस, फ़िशिंग, हैकिंग—इनके बारे में सुनते

हैं। बहुत कम लोग एक्सजेड Utils के बारे में जानते हैं। यह एक कम्प्रेशन टूल है—कुछ खास नहीं, बस डेटा को संपीड़ित करने वाली एक सिस्टम यूटिलिटी। ना चमकदार, ना लोकप्रिय। लेकिन यह चुपचाप कई Linux सिस्टमों में मौजूद रहती है—ठीक वैसे जैसे घर की पाइपलाइन: तभी याद आती है जब खराब हो जाए और यही वजह है कि यह एक आकर्षक लक्ष्य था। अगर आप किसी ऐसी चीज़ से समझौता कर लें जो हर जगह है मगर कोई ध्यान नहीं देता, तो आपको एक एक सिस्टम पर हमला करने की ज़रूरत ही नहीं रहती। आप उस हिस्से पर वार करते हैं जो लाखों मशीनों में अपने आप शामिल होता है।

यह कोई त्वरित हमला नहीं था। रिपोर्टों में आया कि जिया टॉन नाम के योगदानकर्ता ने धीरे धीरे विश्वास अर्जित किया। शुरू में छोटे मोटे कामों में मदद, फिर ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती गईं धीरे-धीरे लोग उन पर निर्भर होना शुरू हो गए और अंततः वे रिलीज़ प्रकाशित करने जैसे महत्वपूर्ण अधिकारों तक पहुँच गए। ओपन सोर्स प्रोजेक्ट में ऐसे अधिकार ही असली चाबी होते हैं। ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर में "चाबी" का मतलब होता है—

महत्वपूर्ण बदलाव करने की अनुमति या रिलीज़ में चीज़ें जोड़ने का अधिकार।

हम क्या सीख सकते हैं?

साधारण उपयोगकर्ताओं के लिए

- डिवाइस अपडेट रखें, लेकिन अविश्वसनीय सोर्स से सॉफ्टवेयर ना लें
- मरोसेमंद ऐप स्टोर/रिपॉज़िटरी इस्तेमाल करें
- मल्टी फैक्टर ऑथेंटिकेशन का उपयोग करें
- आवश्यक डेटा का नियमित बैकअप रखें

संगठनों के लिए

- अपडेट्स को धीरे धीरे लागू करें, तुरंत सभी सिस्टम पर नहीं
- कौन कौन सी लाइब्रेरीज़ पर निर्भर हैं—इनका रिकॉर्ड रखें
- सिर्फ ज्ञात ख़तरों के नहीं, अजीब व्यवहार के संकेत भी देखें
- महत्वपूर्ण ओपन सोर्स परियोजनाओं को समर्थन दें

इसलिए एक्सजेड Utils की कहानी सिर्फ "टेक्निकल" नहीं है। यह मरोसे, सतर्कता, और समय पर कदम उठाने की कहानी है।

****

रोहित कुमार साव

उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

वास्तविक सुख की अनवरत खोज

मनुष्य अनादि काल से सुख की खोज में भटकता रहा है। यह एक ऐसी सार्वभौमिक लालसा है जो हर व्यक्ति के हृदय में निवास करती है, चाहे वह किसी भी संस्कृति, धर्म या सामाजिक पृष्ठभूमि का हो। कोई व्यक्ति अपने जीवन का संपूर्ण सार तीर्थयात्राओं में ढूंढता है, यह विश्वास करते हुए कि पवित्र स्थलों की यात्रा उसे आंतरिक शांति और परमानंद प्रदान करेगी। वहीं, कुछ लोग धन-संपत्ति के अंबार लगाने और समाज में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करने में ही वास्तविक सुख की कल्पना करते हैं, उन्हें लगता है कि भौतिक समृद्धि और सामाजिक सम्मान ही जीवन का परम लक्ष्य है। इसके विपरीत, कई ऐसे भी हैं जो क्षणिक इंद्रिय सुखों और भौतिक विलासिता में ही परम आनंद का अनुभव करते हैं, उनका मानना है कि भोग-विलास ही जीवन का सार है। परंतु, जब तक मनुष्य स्वयं के आत्मिक स्वरूप को नहीं पहचानता, जब तक वह अपनी आंतरिक चेतना की ओर अपना ध्यान केंद्रित नहीं करता, तब तक उसकी यह खोज हमेशा अधूरी ही रहती है, एक अंतहीन यात्रा के समान जो कभी अपने गंतव्य तक नहीं पहुंचती।

इस स्थिति को एक प्राचीन उपमा से समझा जा सकता है: जंगल में रहने वाला एक मृग, कस्तूरी की मोहक सुगंध से आकृष्ट होकर दिशाहीन होकर इधर-उधर दौड़ता रहता है। वह नहीं जानता कि जिस सुगंध की तलाश में वह वन-वन भटक रहा है, जिस मादक खुशबू के पीछे वह उन्मत्त होकर भाग रहा है, वह किसी बाहरी स्रोत से नहीं आ रही, बल्कि उसकी अपनी ही नाभि में स्थित कस्तूरी ग्रंथि से उत्पन्न हो रही है। मृग की यह स्थिति अत्यंत करुण और विचारणीय है, क्योंकि वह अपने भीतर के खजाने से अनभिज्ञ होकर बाहर की दुनिया में उसे खोज रहा है। ठीक इसी प्रकार, मनुष्य की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। वह अपने जीवन में सुख, शांति और आनंद की तलाश बाहरी दुनिया में करता रहता है, वह उन्हें सांसारिक वस्तुओं, संबंधों और उपलब्धियों में ढूंढता है, जबकि उनका वास्तविक और शाश्वत स्रोत उसके अपने अंतर्मन में ही गहराई से निहित है। यह आत्मज्ञान की कमी ही है जो उसे बाहरी भटकाव की ओर ले जाती है, जबकि समाधान उसके भीतर ही मौजूद है।

असंख्य साधकों और आध्यात्मिक गुरुओं ने अनादिकाल से ध्यान और विभिन्न साधना पद्धतियों के माध्यम से परम

चेतना, परमात्मा या आत्मज्ञान की खोज की है। यह साधना निस्संदेह आत्मिक उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है, यह हमें अपने भीतर झांकने का अवसर प्रदान करती है। परंतु, यदि यह खोज केवल बाहरी कर्मकांडों, धार्मिक अनुष्ठानों या विभिन्न रूपों तक ही सीमित रह जाए, यदि हम केवल सतही तरीकों से ही आत्मज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें, तो वास्तविक लक्ष्य तक पहुंचना अत्यंत कठिन हो जाता है। परम सत्य या ईश्वरीय तत्व कहीं दूर, किसी अज्ञात लोक में स्थित नहीं है; यह हमारे अंतःकरण में, हमारे हृदय की गहराइयों में ही प्रतिष्ठित है।

वास्तविक, टिकाऊ और सच्चा सुख संयम, संतुलन और त्याग जैसे उदात्त गुणों के उद्गम स्थल से ही प्रवाहित होता है। संयम, जिसका अर्थ है अपनी इंद्रियों और इच्छाओं पर नियंत्रण रखना, जीवन को एक सुव्यवस्थित और अनुशासित दिशा प्रदान करता है। यह मन को अनावश्यक भटकाव से बचाता है और उसे शांति तथा स्थिरता प्रदान करता है। संयमित जीवन जीने से व्यक्ति अपने आवेगों पर नियंत्रण प्राप्त करता है, जिससे अनावश्यक तनाव और चिंताएं कम होती हैं। संतुलन, जीवन के हर क्षेत्र में सामंजस्य स्थापित करने की कला है – कार्य और आराम में, भौतिक और आध्यात्मिक आकांक्षाओं में, देना और लेना में। यह हमें एक समरस जीवन जीने में मदद करता है। त्याग का अर्थ है आसक्ति से मुक्ति, भौतिक वस्तुओं और परिणामों के प्रति मोह का त्याग करना। यह हमें स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के कल्याण के बारे में सोचने की प्रेरणा देता है, और इस प्रक्रिया में हमें एक गहरा आंतरिक संतोष मिलता है। विडंबना यह है कि मनुष्य इस गहन सत्य को अपने बौद्धिक स्तर पर जानता तो है, वह इसके महत्व को समझता है, पर उसे अपने व्यवहारिक जीवन में उतारने में अक्सर असफल रहता है। वह संयम और उसके लाभों की प्रशंसा करता है, दूसरों को संयमी जीवन जीने की सलाह भी देता है, पर अपने स्वयं के जीवन में असंयम और अनियंत्रित इच्छाओं को ही स्थान देता है। परिणामस्वरूप, वह असंतोष, निराशा और दुख के एक अंतहीन चक्र में उलझा रहता है, जिससे बाहर निकलना उसके लिए कठिन हो जाता है।

आज के आधुनिक युग में, दुनिया भर में बाहरी उपलब्धियों की चमक और चकाचौंध में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। सुख की तलाश, पहले से कहीं अधिक तीव्र और उन्मादी हो गई है, हर कोई जल्दी से जल्दी सुखी होना चाहता है। लेकिन इस तीव्रता के अनुपात में ही बेचैनी, तनाव और मानसिक अशांति भी बढ़ी है। यह स्थिति हमें एक ही महत्वपूर्ण निष्कर्ष की ओर ले जाती है, एक अटल सत्य की ओर इशारा करती है कि वास्तविक और स्थायी सुख किसी बाहरी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति में नहीं है, बल्कि यह हमारे अपने भीतर, हमारी आत्मा के गहनतम प्रदेश में निवास करता है। उसे पाने का एकमात्र और सीधा मार्ग आत्मचिंतन, अपनी आत्मा का अवलोकन, संयमित जीवनशैली और एक संतुलित दृष्टिकोण से होकर गुजरता है। यही जीवन की सच्ची और शाश्वत ऊर्जा है, जो हमें भीतर से सशक्त और शांत बनाती है, और हमें वास्तविक आनंद का अनुभव कराती है।

****

साक्षी साव
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की उक्ति ***"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"*** केवल एक साहित्यिक कथन नहीं, अपितु राष्ट्रीय विकास का एक मूलभूत सिद्धांत है। जैसे-जैसे विश्व डिजिटल क्रांति की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है, यह प्रश्न प्रासंगिक हो जाता है कि इस तकनीकी युग में मातृभाषा की क्या भूमिका होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण, क्लाउड कंप्यूटिंग और डिजिटल वित्तीय सेवाओं ने समाज की संरचना को नया स्वरूप दिया है। बैंकिंग, क्रेडिट, कराधान और सार्वजनिक वित्त जैसे सभी क्षेत्र अब डिजिटल माध्यमों पर निर्भर होते जा रहे हैं। ऐसे परिवेश में यह विचार उभर सकता है कि क्या तकनीकी प्रगति के साथ मातृभाषा का महत्व कम हो जाएगा? वास्तव में, इसका उत्तर विपरीत है—डिजिटल युग में मातृभाषा का महत्व और भविष्य दोनों ही अत्यंत उज्ज्वल हैं।

मातृभाषा विचार और पहचान की आधारशिला

मातृभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि हमारी चेतना, संस्कृति और बौद्धिक विकास की आधारशिला है। मनुष्य जिस भाषा में सोचता है, उसी में उसकी सृजनात्मकता और तार्किक क्षमता का सर्वोत्तम विकास होता है। शिक्षा, नीति-निर्माण, प्रशासन और वित्तीय जागरूकता यदि मातृभाषा में प्रदान की जाए, तो उसका प्रभाव अधिक गहन, व्यापक और स्थायी होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इसी भाव को स्पष्ट किया था: ***"कोई भी राष्ट्र सच्ची उन्नति नहीं कर सकता यदि वह अपनी भाषा की उपेक्षा करता है।"*** डिजिटल युग में यह उन्नति केवल साहित्यिक या सांस्कृतिक नहीं, बल्कि तकनीकी और आर्थिक सशक्तिकरण से भी जुड़ी है। मातृभाषा में उपलब्ध डिजिटल ज्ञान व्यक्ति को न केवल सूचना प्रदान करता है, बल्कि आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करता है।

डिजिटल समावेशन और वित्तीय सशक्तिकरण

एक विश्लेषक के रूप में, मेरा अनुभव है कि जब निवेश, कर योजना, बैंकिंग सेवाएँ या सरकारी योजनाओं की जानकारी मातृभाषा में उपलब्ध होती है, तो नागरिक अधिक सजग और सक्षम होकर आर्थिक निर्णय लेते हैं। डिजिटल

प्लेटफॉर्म पर क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री की उपलब्धता ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को वित्तीय मुख्यधारा से जोड़ती है।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का प्रेरक विचार स्मरणीय है: ***"ज्ञान का प्रसार ही सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है।"*** विनिर्मित उत्पाद इस दिशा में एक सेतु का कार्य कर सकते हैं, जिससे आर्थिक लोकतंत्रीकरण और पारदर्शिता दोनों में सहायता मिलती है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, ***"शिक्षा वह है जो व्यक्ति के भीतर की शक्ति को जागृत करे।"***

तकनीक और भाषा का समन्वय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद, वॉयस असिस्टेंट और बहुभाषी एप्लिकेशन—ये सभी संकेत हैं कि भविष्य एक बहुभाषी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में डिजिटल प्रगति तभी समावेशी होगी, जब तकनीक मातृभाषाओं को आत्मसात करेगी।

महात्मा गांधी का यह विचार आज के संदर्भ में अत्यंत सार्थक प्रतीत होता है: ***"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है।"***

रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने भी कहा था: ***"अपनी भाषा में शिक्षा ही सच्ची स्वतंत्रता की पहली सीढ़ी है।"***

डिजिटल माध्यम इस स्वतंत्रता को और अधिक सुलभ बना सकते हैं।

डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य

भविष्य में ई-लर्निंग, ई-गवर्नेंस, फिनटेक और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में मातृभाषाओं की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होगी। क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री और नवाचार न केवल रोजगार के अवसर उत्पन्न करेंगे, बल्कि ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करेंगे। डिजिटल युग में मातृभाषा का भविष्य केवल संरक्षण तक सीमित नहीं रहेगा; वह नवाचार, समावेशन और सतत विकास की प्रेरक शक्ति बनेगी।

डिजिटल युग में मातृभाषा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की प्रौद्योगिकी को जन-जन तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम है।

अतः, यह स्पष्ट है कि डिजिटल युग में मातृभाषा का महत्व कम नहीं हुआ, बल्कि और अधिक प्रासंगिक हुआ है। यह सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक अस्मिता और लोकतांत्रिक दृढ़ता का आधार है। यदि हम तकनीकी क्षमताओं को भाषाई संवेदनशीलता के साथ समन्वित करें, तो भारत न केवल एक डिजिटल महाशक्ति बनेगा, बल्कि अपनी सांस्कृतिक आत्मा को भी सुरक्षित रखते हुए विश्व में एक विशिष्ट पहचान स्थापित करेगा।

अतः, मैं कहना चाहूँगी कि: "जो राष्ट्र अपनी मातृभाषा को डिजिटल युग में सशक्त बनाता है, वही भविष्य की दिशा निर्धारित करता है।"

****

शुभम सिंह,
कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना), इरेडा

जूतों की अदला-बदली

दिन भर में हम कई लोगों से मिलते हैं और कई ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जो हमारे धैर्य की परीक्षा लेती हैं। कभी हमें गुस्सा आता है, कभी हम आहत होते हैं, और कई बार हम बिना किसी की पूरी कहानी जाने ही उनके बारे में जल्दी से निर्णय बना लेते हैं। लेकिन क्या हो अगर हम एक पल के लिए खुद को उनकी जगह रखकर सोचें?

जैसे हम अलग-अलग यात्राओं के लिए अलग-अलग जूते पहनते हैं, वैसे ही हर व्यक्ति अपने अनुभवों, संघर्षों और विचारों के साथ जीवन की राह पर चल रहा होता है। यदि हम थोड़ी देर रुककर खुद को किसी और के जूतों में खड़ा करके देखें, तो शायद हम समझ सकें कि वे कैसा महसूस करते हैं और किसी स्थिति को किस तरह देखते हैं। दुनिया हमें उस जगह से बिल्कुल अलग दिखाई दे सकती है वह खड़े हैं। जो बात हमें लापरवाही लगती है, वह शायद किसी और के लिए सही काम करने की कोशिश हो। जो हमें देरी लगती है, वह किसी ज़रूरतमंद के लिए दया और मदद का एक छोटा सा कदम हो सकता है।

दूसरों के जूतों में खुद को कल्पना करने की यह छोटी-सी आदत धीरे-धीरे हमारे व्यवहार को बदल सकती है। गुस्से की जगह धैर्य आ सकता है, और निर्णय करने की जगह समझ और सहानुभूति पैदा हो सकती है। हमें महसूस होगा कि हमारे आसपास हर व्यक्ति अपने तरीके से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, ठीक हमारी तरह।

यदि अधिक लोग अपने रोज़मर्रा के जीवन में यह सरल अभ्यास अपनाएँ, तो हमारे संवाद अधिक शांत और हमारे व्यवहार अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। इससे टकराव कम होंगे और आपसी सम्मान बढ़ेगा।

विश्व शांति भले ही एक बड़ा सपना लगे, लेकिन इसकी शुरुआत अक्सर छोटे कदमों से होती है। कभी-कभी यह शुरुआत उतनी ही सरल होती है जितनी किसी और के जूतों में खड़े होकर दुनिया को देखने की कोशिश करना। जब हम दूसरों के नज़रिये से दुनिया को समझना सीख जाते हैं, तब समाज अधिक विनम्र, अधिक संवेदनशील और सच में रहने के लिए एक बेहतर जगह बन जाता है।

****

राहुल राज

कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना), इरेडा

बिंब-क्षमता का विकास

हिन्दी साहित्य में "बिंब" केवल सौंदर्य-वर्धक अलंकार नहीं, बल्कि वह माध्यम है जो शब्दों को दृश्य और दृश्य को अनुभव में बदल देता है। बिंबों का श्रृंगार रस तक सीमित रह जाना उचित नहीं। उसकी शक्ति इससे कहीं अधिक व्यापक और प्रभावी है। बिंब लेखक की कल्पनाशक्ति को प्रमाणित करता है; जितने गहरे उसके अनुभव, उतनी ही सशक्त उसकी बिंब-रचना।

आज के समय में अगर इसे समझना हो तो इसे एआई मॉडल के प्रॉम्प्ट से तुलना करके आसानी से समझा जा सकता है। जिस प्रकार सबसे बड़े और विविध डेटासेट वाले मॉडल से सर्वोत्तम छवियाँ उत्पन्न होती हैं, उसी प्रकार वह लेखक जिसकी दृष्टि विस्तृत हो, जो संसार को अनेक रूपों में देखकर समझता हो, वही अपनी रचनाओं में गहरे, तीक्ष्ण और सजीव बिंब उत्पन्न कर सकता है।

बिंब पाठक को दृश्य के भीतर प्रवेश करने देते हैं; उसे केवल पढ़ाया नहीं जाता, अनुभव कराया जाता है। उदाहरण के तौर पर, पूस की रात कहानी में ठंडी रात का वर्णन है- "चारों ओर कड़कड़ाती ठंड, खेत में जलती-बुझती आग और हल्कू का ठिठुरता शरीर।"

बिंब कथा को रोचक बनाते हैं। वे एक मृत कथानक में भी प्राण फूंक देते हैं। वे उस कंकाल को मांस-पेशियाँ देते हैं जिसे हम कथानक कहते हैं। एक मृत-सी कहानी भी केवल बिंबों के सहारे जीवंत हो सकती है। प्रेमचंद ने जब "होरी के फटे कुर्ते" का बिंब रचा, तो वह केवल वस्त्र का वर्णन नहीं था, वह किसान की दरिद्रता का सजीव चित्रण था। मेरा मानना है कि हम कुछ भी बिल्कुल नये सिरे से उत्पन्न नहीं करते। हमारी सारी 'नवीनता' हमारे ही पुराने अनुभवों का परिष्कृत रूप है। बिंब उन्हीं अनुभवों की अभिव्यक्ति है, जिसे लेखक एक नये, ताज़ा रूप में प्रस्तुत करता है।

कल्पना के विषय में एक मान्यता यह भी है कि मनुष्य वही सोच सकता है जिसे उसने किसी रूप में देखा, सुना या अनुभव किया हो। यदि कोई वस्तु या अनुभूति हमारे अनुभव-दायरे में ही नहीं आई, तो उसकी सजीव कल्पना करना लगभग असंभव हो जाता है। जो व्यक्ति कभी हवाई जहाज में न बैठा हो, वह उड़ान की वह अनुभूति नहीं रच सकता,

जो एक लेखक अपने पाठक में जगाना चाहता है। अतः कल्पना को परिष्कृत करने हेतु विश्व-गमन आवश्यक है। जब हम नई-नई वस्तुओं और परिस्थितियों को देखेंगे, तभी उनकी कल्पना भी कर सकेंगे। इसीलिए कहा जाता है कि अनुभव जितना विस्तृत, बिंब उतना सशक्त।

बिंब साहित्य का केवल अलंकार नहीं, बल्कि उसकी आत्मा हैं। वे रचनाकार को उसके अनुभवों से जोड़ते हैं और पाठक को लेखक की कल्पना में सहभागी बनाते हैं। आवश्यकता है कि बिंबों का संसार पुनः समृद्ध हो इसके लिए बिंब लिखने वाले और पढ़ने वाले दोनों को ही अपना स्तर उठाना होगा।

******

दिग्विजय सियाग
पुत्र- भागीरथ सियाग

ए.सी.सी. की एक रोमांचक यात्रा

2025 के 9 से 14 नवंबर के बीच के दिन शायद ही मैं कभी अपनी ज़िन्दगी में भूल पाऊँ। उन दिनों हमारे स्कूल की ओर से हमें "एमिटी कैडेट कॉर्प्स (A.C.C.)" कैंप के लिए ले जाया गया था। मेरे कई दोस्तों के लिए यह पहली बार था जब वे घर से इतनी दूर अकेले जा रहे थे। मेरे लिए यह नया नहीं था, फिर भी हम सभी में समान उत्साह था।

कैंप से एक महीने पहले ही तैयारी और चर्चाएँ शुरू हो गई थीं—कौन क्या लाएगा, कौन किसके साथ टेंट में रहेगा। आखिरकार प्रस्थान का दिन आया। सुबह 6:30 बजे स्कूल पहुँचना था। मैं 6:25 पर निकला और डर था कि कहीं बस न छूट जाए, लेकिन बस 8 बजे से पहले चली ही नहीं। इस बीच सभी दोस्तों से मुलाकात हुई और सबके बैग देखकर हँसी भी आई—कुछ तो चार-चार बैग लेकर आए थे।

सोलंकी सर के साथ हमारी यात्रा शुरू हुई। गानों, खाने और हरियाणा के सुंदर नज़ारों के बीच कब दो-तीन घंटे बीत गए, पता ही नहीं चला। कैंप स्थल पहुँचकर हरियाली देखकर हम सब चकित रह गए। चूँकि यह कैंप एमिटी यूनिवर्सिटी हरियाणा के साथ था, इसलिए व्यवस्थाएँ बहुत अच्छी थीं।

जाँच-पड़ताल के बाद हमें टेंट सौंपे गए। मैं अपने जिगरी दोस्तों—शौर्य, अथर्व, अर्णव, अयान, वेदांश और लक्षिण—के साथ रुका। पहले ही दिन हमें शारीरिक अभ्यास करवाए गए, जो कुछ के लिए मुश्किल थे। रात 10 बजे सोने का नियम था, लेकिन असली हलचल उसके बाद शुरू हुई। कुछ शरारती हरकतों के कारण पूरी रात हमें सज़ा मिली—ठंड में घुटनों पर खड़ा रहना पड़ा। मानेसर की ठंड और मेरे शॉर्ट्स पहनने की वजह से हालत और खराब हो गई।

अगली सुबह ठंडे पानी से सामना हुआ, जिसकी याद आज भी सिहरन पैदा कर देती है। परेड ठीक न होने पर कीचड़ में रेंगना पड़ा और पहली बार लगा कि कैंप आना गलती थी। तभी एक सेवानिवृत्त सेना जनरल आए और पैराग्लाइडिंग करवाने ले गए। आसमान में बिताए वे कुछ पल मेरे जीवन के सबसे रोमांचक पलों में से एक बन गए।

इसके बाद शूटिंग, ट्रेकिंग और ज़ॉर्बिंग जैसी गतिविधियाँ हुईं। एक दिन बाल भी कटे—कुछ दोस्त नए उपनामों के साथ मशहूर हो गए। रातों में डरावनी कहानियाँ सुनाई गईं और डर के मारे हम सात दोस्त चार गद्दों पर सिमटकर सोए।

अंतिम दिन परेड, कुत्तों की प्रदर्शनी और समापन कार्यक्रम हुआ। गर्मी के बावजूद सबने पूरी मेहनत की, क्योंकि अंत में जलेबी और कोल्ड ड्रिंक का इनाम था। थकान से भरी वापसी यात्रा में अधिकतर लोग सो गए। स्कूल पहुँचते ही माँ को देखकर राहत मिली।

घर पहुँचकर जब व्हाट्सऐप पर कैंप की तस्वीरें देखीं, तब समझ आया कि यह यात्रा जीवन भर याद रहने वाली है। ए.सी.सी. कैंप मेरे लिए रोमांच, दोस्ती और सीख से भरी एक यादगार यात्रा था।

****

जनवरी-मार्च 2026 तिमाही के दौरान हुई राजभाषा गतिविधियों की झलकियां

दिनांक 20.01.2026 को श्री नवीन कुमार प्रजापति, सदस्य, सलाहकार समिति (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, भारत सरकार एवं पूर्व सलाहकार तथा केन्द्र प्रभारी, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (कोलकता), राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा "हिंदी की सुदीर्घ यात्रा" विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित किया गया।

श्री नवीन कुमार प्रजापति, सदस्य, सलाहकार समिति (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, भारत सरकार एवं पूर्व सलाहकार तथा केन्द्र प्रभारी, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (कोलकता), राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा इरेडा की ई-पत्रिका अक्षय क्रांति के अक्टूबर-दिसंबर 2025 अंक का विमोचन किया गया।

दिनांक 29.01.2026 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली उपक्रम-1 की 62 वीं अर्धवार्षिक बैठक में सुश्री माया लवनिया, कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित कार्यालय, दिल्ली के कर कमलों से इरेडा को नराकास के अधीन प्रतियोगिता आयोजक सदस्य श्रेणी में पुरस्कार प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली उपक्रम-1 के तत्वावधान में आयोजित हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद प्रतियोगिता में सुश्री सरबजीत कौर, वरिष्ठ प्रबंधक (मां. सं.) को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ।

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय / Registered Office

प्रथम तल, कोर-4ए, ईस्ट कोर्ट, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003,
दूरभाष / Phone +91-11-24682206-19 फैक्स / Fax +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय / Corporate Office

तीसरी मंजिल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली - 110066
दूरभाष / Phone : +91-11-2671400-12 फैक्स / Fax +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केंद्र / IREDA Business Centre

एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, प्लेट बी, 7वीं मंजिल, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली - 110023
दूरभाष / Phone : +91-11-24604157, 24347700-24347799

ई-मेल : cmd @ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial